प्रकृति पर मानव का हस्तक्षेप

"जननी जन्मभूमिश्च
स्वर्गादपि गरीयसी"

माँ और अपना माता प्रकृति स्वर्ग से बड़ा है। प्रकृति हम को फल, फूल, लकड़ी औषध आदि मिलते हैं।

घने पेड़ों से सजे पर्वत, खिल-खिलाकर बहती नदियाँ, काली घटा से अपनेवालों को खोलकर झूमती बारिश, हरा-घोहरा पहनकर नाचते, लह-लहाते खेत सब प्रकृति का विशेषताएँ हैं।

इस सुन्दर सरल प्रकृति का एक बहुत बड़ा वरदान है 'पेड़'। पेड़ हमको शुद्धवायु और शुद्धजल मिलते हैं। पेड़ से वर्षा मिलते हैं। पेड़ हमारा एक अच्छा दोस्त है क्योंकि वह हमारेलिए जीते हैं। पेड़ से बीना मानव को

नदी पशु - पक्षी जगत के लिए जीवित रहना कठिन हो जाएगा। पेड़ जीवन का आधार है।

पशु - पक्षी, जल, वायु, सूरज और चाँद सब मानव के लिए है। इस सब का फल स्विकार करने का अवसर मानव को दिया। इसके साथ इस सब का पालन करने का दायित्व भी थी।

परन्तु आज मानव अपना दायित्व भूल कर स्वर्थ लाभ के लिए काम करते है। वह पेड़ पालन करने के स्थान में पेड़ काटते है। इसका कारण प्रकृति का संतुलिन बिगड नष्ट हो जाते है। शुद्धवायु या शुद्धजल के बिना मनुष्य मार जाते है। कृषि का नाश होते है। वर्षा का कमी होती है। कहा जाता है कि अगली विशयुद्ध पानी के लिए होती है।

प्रकृति पर मनुष्य का एक हस्तक्षेप है पेड़ काटना। इसका फल है आजकाल दिल्ली में होता वायुप्रदूषण। दिल्ली के लोग इस

प्रदूषण के कारण मार जाते है।

आज का युग में एक विश व्यापी समस्या है प्रदूषण। वायु, जल, मिट्टी सब आज दूषित हो जाते है। परियवरण प्रदूषण यदि इसी प्रकार बढ़ता रहा तो मनुष्य समाज और पशु-जगत केलिए जीवित रहना कठीन हो जाएगा। वासत्व में प्रदूषण उद्योग धन्धों का विकास तथा जनसंख्या वृधी का परिणम भी है।

आज प्रदूषण के कारण प्रकृति संतुलिन को असंतुलिन हो जाते है। आज भारतवासी सभी बूरी वास्तुओं डालने का जगह नदी मानते है। इसका कारण नदी मालिनों से भर कर पिने का पानी भी नष्ट हो जाती है।

कारखानों से या वाहनों से निकलने वाले कर्बण वायु को प्रदूषित करती है। कीडनाशिनीयाँ का प्रयोग तथा प्लास्टिक मिट्टी को प्रदूषण में ले जाते है। इस बहुत बडा समस्या प्रदूषण भी विवेक और बुद्दिशाली मनुष्य का कामों का

फल है।

कुछ महिनों के पहल हमारा छोटा सा ~~हिस्सा~~ राज्य ~~केरल~~ केरल में आया महा प्रलय इस का अच्छा सा उदाहरण है। सभी तरह की समृद्धीयाँ से भरा है केरल। तो भी यहाँ, इस स्वर्ग में भी आज प्रदूषण से पीडित होती है।

आज हम सब मानव अपना सोचता का बहुत ध्यान रहते हैं। तो भी परियावरण सोचता से रहने को ध्यान नहीं करती है। ~~इस~~ ~~हम~~ ~~प्रकृति~~ का यह प्रदूषण का बहुत बडा करण है। इस के कारण प्रकृति को भी नहीं हमारी स्वयं भी नष्ट हो जाती है।

हमारा भारत एक बहुत बडा देश है। हम सब भारतवासीयों का एक पवित्र ~~का~~ कार्तव्य था कि हमारी हरियाली और नदी नालों का पालन करना।

तो भी आज मानव का हस्तक्षेप प्रकृति को एक अभिशाप ~~होनी~~ हो जाते है।

(Note: Graded articles may be published in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).

इस दुनिया का सभी चीजों पालन करने केलिए ईश्वर का प्रतिरूप है मानव। इसलिए हम इस दुनिया को पालन करना चाहिए।

एक पेड़ कटने के स्थान में दो नदी कितने सके उतना पेड लग ने से इस प्रकृति को बच सकें। पानी की कमी से बच सकें। वायु - मिट्टी, जल आदि प्रदूषण से रोक सकते।

इस सुन्दर सारल प्रकृति में मानव की मनोरंजन केलिए ज्यादा कार्य है। तो आज के लोग इस सब भूल कर केवल माध्यमों में उसका मनोरंजन करते है। इसके कारण युव पीढी केलिए माध्यम एक नाश होती है।

आज हमारा विद्यालयों में हरित सेना ऐसा नामका कोई संघटनाएँ काम करते है। इस सब का लक्ष युवपीढी में प्रकृति को प्यार करने का और इसका संरक्षण करने का पहला अक्षर लिखना है। ऐसा एक अच्छा

युव पीढी को बनना है।

सभी वस्तुओं के दो भाग है भलाई और बुराई की। आज मानव का काम प्रकृति की बुराई के साथ है तो भी हम अपना प्रकृति को प्यार करने में अपना काम फलाई केलिए होती है।

इसलिए मेरी प्रर्थना यह है कि मानव का कामें प्रकृति के भलाई केलिए होना चाहिए। आज का दुनिया में सभी लोग शिक्षक होती है। इसलिए हम अपना काम और आँख खोलकर रहे तो भलाई अपने वश में रह सकते है।

प्रकृति में मानव का हस्तक्षेप एक वरदान होना चाहिए। हिन्दी के प्रमुख कवि कबीरदास की एक कहावत है "कल करे सो आज कर आज करे सो अब।" इसके सामान प्रकृति को पालन करने का हमारा कामों अब तक शुरु करना चाहिए।

प्रकृति को प्यार करकर, अपना दायित्वों का पालन करते, अपना काम अच्छा से करते अपना ~~हस्तक्षेप~~ हस्तक्षेप प्रकृति को वरदान दोनों का परिश्रम करते जीने का कोशिश करो।